

रज़ा को पेरिस गये पच्चीस साल हो गये । लगता है, सदियां बीत गयीं, फिर भी बात कल की है । बावरिया, बचई और मंडला (मध्य प्रदेश) के घने जंगलों के बीच बीता बचपन, दमोह के स्नेहमय सात्विक वातावरण में कटी किशोरावस्था और नागपुर तथा बंबई में चुनौतियों और संघर्ष के साथ गुजरे युवावस्था के वे दिन—एक चित्र-वीथी की तरह सामने आकर प्रस्तुत हो जाते हैं—संकल्प और उत्साह के साथ एक नये चित्र-संसार की रचना, कभी कविता में ढले दिन और संगीत से बसी रातें, कभी परिवार या समाज से जुड़े अनिश्चय या तनाव के क्षण, तो कभी चित्र-प्रक्रिया के दौरान नया विचार या नयी शैली को लूढ़ निकालने का चरम सुख । अपनी लोकप्रियता की पहली ही मंजिल पर अवतूबर, १९५० में वे पेरिस चले गये । जहाज आगे बढ़ा, देश छूटता गया । छूटता गया सतपुड़ा, नर्मदा का उफान, चटक रंगोंवाला राजस्थान, मंडला और दमोह की रातों का सन्नाटा, काना किसली के जंगलों का जादू । पीछे रह गयी आवारगी, तन्हाइयां और परेशानियां, फिर भी गीता और कुरान उनके साथ थीं, और साथ था वह अभय गीत, जो बचपन से मिला दान की तरह, और जो उनकी चित्रमय भाव-यात्रा का हमसफर रहा है ।

रज़ा विदेश के हो कर रह गये । आये जरूर, दो बार, लेकिन चंद दिनों को । क्या भारत उनसे छूट गया ? नहीं । उनका जवाब है, “मैं यहीं हूँ, मैं यहीं रहा, मैं कहीं नहीं गया । पास वही है जिसके दिल में अहसास है, जो सोचता है, जो अपनी क्षमता के अनुसार काम करता रहा है, जिसकी जड़ें उस जमीन में हैं, जिससे उसे रस मिलता रहा है । विश्वास न हो तो पूछ लीजिए सतपुड़ा से, नर्मदा से, राजस्थान से...”

रज़ा कहीं भी गये, उनके कानों में गूंजता रहा इस जमीन का वही एक गीत, जो उनकी विकास-यात्रा के मूल में समाया हुआ है, मीरा की भक्ति की तरह, सूर की पीर की तरह, ‘छिति जल पावक गगन समीरा’ से निर्मित पंचभूत शरीर उसी गीत को गुंजायमान कर रहा है चित्रों के माध्यम से ।

— सतीश वर्मा

Sayed Haider RAZA was born in 1922, in Babaria, Madhya Pradesh, India. He studied painting at the Nagpur School of Art and the Sir J. J. School of Art, Bombay. After several exhibitions in India, he left for France in 1950 on a French Government Scholarship and studied at the Ecole Nationale des Beaux-Arts from 1950 to 1953.

He was awarded the Prix de la Critique in Paris, in 1956. He married the French artist Janine Mongillat, in 1959. The University of California invited him as visiting lecturer at the Art Department of Berkeley, in 1962. He visited India in 1959, 1968 and 1976.

Raza lives and works in Paris and in Gorbio, A.M., France.